वर्ष 7, अंक 2

ISSN 2456-3838

पिक्चर प्लस

सितम्बर, 2023 ₹ 65

ज़िन्दगी का बायस्कोप

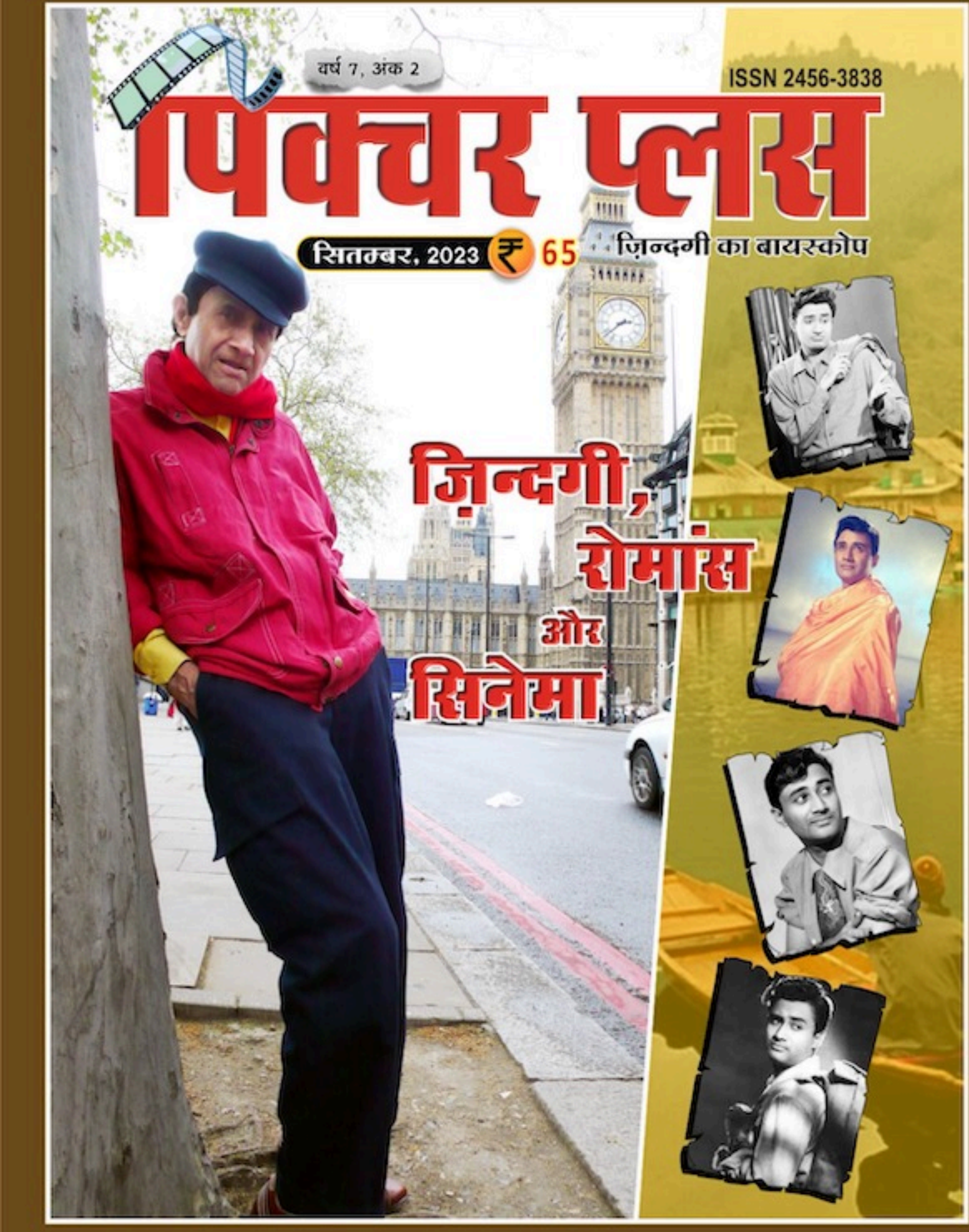

ज़िन्दगी, रोमांस और सिनेमा

ISSN 2456 - 3838
Licence N. F2(P19) PRESS 2016

पिक्चर प्लस
वर्ष-7, अंक-2, सितंबर, 2023
मासिक, द्विभाषिक/हिंदी-अंग्रेजी

संपादक
संजीव श्रीवास्तव

संपादन सहयोग
कल्पना कुमारी

कवर डिजाइन
ज़ाहिद मोहम्मद खान

लेआउट डिजाइन
शाश्वती

पंजीकृत पता
37/ए, तीसरी मंज़िल, गली नंबर 2
प्रताप नगर, मयूर विहार
फेज -1, दिल्ली - 110091

मूल्य- 65 रुपये (एक प्रति)
वार्षिक - 1,000 रुपये (व्यक्तिगत)
5,000 रुपये (संस्थागत)

पत्रिका के डिजिटल संस्करण नॉटनल
(www.Notnul.com) से खरीद सकते हैं।
संपर्क - 9313677771
Email: pictureplus2016@gmail.com

नोट : सभी रचनाओं में व्यक्त विचारों से पत्रिका की संपादकीय नीति, राजनीतिक विचारधारा तथा लेखक, प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं। पत्रिका के किसी भी पक्ष से संबंधित कानूनी निपटारे का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

(चित्र इंटरनेट से साभार व सभी पद अवैतनिक)

अनुक्रम

05. संपादकीय : चलती का नाम गाड़ी - नफ़रत हारी, उलफ़त जीती
06. अरविंद कुमार - माधुरी के वे दिन : देव आनंद को प्रधानमंत्री बनने की इच्छा थी...
08. दीप भट्ट - मैं ज़िन्दगी का साथ निभाता चला गया...
(देवानंद का दस्तावेजी इंटरव्यू)
16. विनोद नागर - रंगीला रे...
18. ताराचंद मकसाने - चॉल से निकलकर चांद तक पहुंचे
21. ज्ञानेश उपाध्याय - रोमांस का राजा : सिनेमा का आनंदवाद
25. जयनारायण प्रसाद - फ्लैश बैक : देव साहेब का कोलकाता कनेक्शन
27. ज़ाहिद खान - ज़िन्दगी के साथ, ज़िन्दगी के बाद
30. Sweet Memories of Suraiya - Dev Anand
33. शुभ समाचार - जावेद अख्तर को मिला शैलेन्द्र सम्मान
34. अजय ब्रह्मात्मज (सिनेमाहौल)- बेहिसाब कामयाबी के बावजूद...
36. दीपक गर्ग- बॉलीवुड ने छह दशक पहले ही की `चांद पर चढ़ाई`
37. पिक्चर प्रश्न 14 के सवाल और पिछले अंक का जवाब
38. मुकेश पोपली- लता जयंती - रहें न रहें हम...
42. संजीव श्रीवास्तव- फिल्में ही दूर कर सकती हैं टैबू
44. प्रहलाद अग्रवाल- उसका कद आपसे बड़ा होगा
46. ऋषिकेश- इस शहर में सिनेमा हॉल था :
याद आया वो ज़ालिम गुजरा ज़माना...
51. विनोद तिवारी- फिल्म पत्रकारिता-7: निर्माता का महत्व
54. मनोज मोहन- पुस्तक प्लस; चरण सिंह अमी की किताबें
58. आभा अनुरंजिता - गीतकार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक संजीव श्रीवास्तव द्वारा 37-ए, गली नं, 2, प्रताप नगर, मयूर विहार, फेज-1, दिल्ली-110091 से प्रकाशित।
संपादक - संजीव श्रीवास्तव। चंद्रशेखर प्रिंटर्स, WZ / 439, नारायणा विलेज, नई दिल्ली - 110026 से मुद्रित।

कवि-गीतकार शैलेन्द्र पर केंद्रित अंक

लेख आमंत्रित

शैलेन्द्र हमारे समय के महत्वपूर्ण जनकवि, गीतकार थे। साहित्य और सिनेमा जगत दोनों ही फोरम पर उनकी रचनाओं को समान भाव से सम्मान मिला। उनके जन्म शताब्दी वर्ष पर पिक्चर प्लस दिसंबर, 2023 में उनकी रचनाशीलता और शख्सियत पर विशेषांक प्रकाशित करने जा रहा है। आप सबसे अनुरोध है कृपया अपने लेख, संस्मरण, इंटरव्यू, टिप्पणी आदि अपनी तस्वीर तथा संक्षिप्त परिचय के साथ निम्न ईमेल पर भेजें।
रचना भेजने की अंतिम तिथि - 15 नवंबर।
ईमेल - pictureplus2016@gmail.com

शैलेन्द्र सदी के महान गीतकार थे - विजय आनंद

शैलेन्द्र एक बेहद संवेदनशील गीतकार थे। उन्होंने फिल्मी गीतों की बंदिशों में रहकर भी सिचुएशन के अनुसार अनेक स्तरीय, साहित्यिक एवं लोकप्रिय गीत लिखे। आर.के. नारायण के प्रसिद्ध उपन्यास 'गाइड' पर जब फिल्म बनाने की घोषणा की गई तो प्रारम्भ में हसरत जयपुरी को बतौर गीतकार अनुबन्धित किया गया। हसरत जयपुरी ने 'गाइड' फिल्म के लिए दो गीत लिखे। एक गीत की रिकार्डिंग भी हो चुकी थी। लेकिन फिल्म के मुताबिक गाना जम नहीं रहा था। मैंने शैलेन्द्र जी से 'गाइड' फिल्म में गीत लिखने के लिए प्रार्थना की। शैलेन्द्र जी ने हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर हमारी चिन्ता को दूर किया। हमारी पहली बैठक हुई। मैंने उन्हें गीत की सिचुएशन समझाई। पांच मिनट के अन्दर ही उन्होंने सिगरेट सुलगाई और सिगरेट के डिब्बे पर गीत का एक मुखड़ा लिखा- दिन ढल जाये हाय, रात ना जाय तू तो ना आये, तेरी याद सताये । बर्मन दा सहित हम सभी खुश हुए। अगली बैठक में मैंने शैलेन्द्र जी को बताया कि फिल्म की नायिका अपने पति की प्रताड़ना एवं उपेक्षा से अपने को अलग करना चाहती है और फिल्म के नायक राजू गाइड से प्रभावित है। दोनों एक-दूसरे के प्रति आकर्षित हैं। राजू में वह अपना भविष्य देख रही है।

पुराने रिश्ते से मुक्त नये रिश्ते को जोड़ने की खुशी। इस सिचुएशन पर उन्होंने बहुत ही सुन्दर गीत लिखा, जो बहुत ही लोकप्रिय हुआ-

कांटों से खींच के ये आंचल
तोड़ के बंधन बांधी पायल, कोई ना रोके दिल की उड़ान को,
दिल ये चला...
आज फिर जीने की तमन्ना है
आज फिर मरने का इरादा है। •

नफ़रत हारी, उलफ़त जीती

हॉल के दिनों में सिनेमा हॉल में उमड़ी भीड़ ने फिर से साबित किया कि हिंदुस्तान में सबसे पॉपुलर मनोरंजन के लिए फिल्में ही सबसे उपयुक्त माध्यम हैं। उसकी जगह कोई दूसरा माध्यम नहीं ले सका। हर नए एडिशन और इनोवेशन के दौर में सिनेमा के संकट की भविष्यवाणी की गई। टीवी सिनेमा को खत्म कर देगा, ओटीटी सिनेमा हॉल को ध्वस्त कर देगा- वगैरह वगैरह। लेकिन ये सभी कुछ समय के बवंडर साबित हुए। यहां तक कि पिछले कुछ सालों में सिनेमा ने किन-किन झंझावातों को झेला है- यह भी हम सब जानते हैं। सिनेमा के ऊपर कितने कीचड़ उछाले गए, कितने तीर चलाए गए, त्रिशूल और तलवार से कितने हमले किए गए, बायकॉट अभियान चलाया गया, सिनेमा में निहित मोहब्बत के संदेश को निशाना बनाया गया, राजनीति हुई, बंबइया सिनेमा के औदात्य को नष्ट करने के मकसद से कुछ ने मेन स्ट्रीम मीडिया में अलग फिल्म नीति और सिटी बसाने की मंशा का प्रचार किया; कुछ पल को ऐसा लगा आज के दौर में बहुत से लोगों को सिनेमा से नफ़रत ही नहीं वहशत भी हो गई है। लोग सिनेमा का नाम लेना भी पाप समझने लगे। सिनेमा उनके लिए जैसे अधर्म हो गया।

अब हालात ने करवट ली। याद कीजिए लॉकडाउन के पीरियड को। घरों में बंद लोग खुद को निगेटिव बनाए रखने के लिए सिनेमा देख देखकर पॉजीटिव होते रहे। गोल्डेन एरा के सिनेमा, गोल्डेन एरा के टीवी सीरियल और ओटीटी सिनेमा ने लोगों का दिल बहलाया- जीवन में सकारात्मकता का संचार हुआ।

वास्तव में यह मध्यांतर का दौर था। इस मध्यांतर में नफ़रती उफ़ान भी खूब देखने को मिले। जैसे कि किसी फिल्म में कोई सीन दर्शकों को बेचैन कर देता है तो वह इंटरवल में निकलकर बाहरी तत्वों में इनवॉल्ब होने लगता है। सिनेमा के निशानेबाज भी कुछ इसी तरह बाहरी तत्वों से प्रभावित हुए और उसमें शामिल होने लगे। नतीजा- सिनेमा के खिलाफ दुष्प्रचार शुरू हो गया। सिनेमा वालों को हिपोक्रेटिक नैतिक मानदंडों पर कसकर उनसे साधु-संत बनने की अपेक्षा की जाने लगी। किसी किसी फिल्म को राजनीतिक दलों के प्रचार का टूल बनाया गया। लेकिन यकीन मानिए सिनेमा फिर भी सिनेमा ही रहा। कोई भी नफरती अभियान सिनेमा को कभी खत्म नहीं कर सका।

जिन्होंने सिनेमा से नफरत की, जिन्होंने बायकॉट अभियान चलाया, जिन्होंने इसे राजनीतिक फायदे का प्रचार पंफलेट बनाया- वे भी सिनेमा देखने के मकसद से ही सिनेमा हॉल में गए। बॉक्स ऑफिस उन्हीं की भीड़ से गुलज़ार हुआ। हजारों करोड़ का कारोबार हुआ। द कश्मीर फाइल्स हो, द केरल स्टोरी हो, पठान हो, ब्रह्मास्त्र हो, रॉकी एंड रानी की प्रेम कहानी हो या कि गदर 2; इन सभी फिल्मों की सुपर कामयाबी के बाद मुंबइया सिनेमा की धाक ने फिर से बड़ा धमाका कर दिया। सिनेमा के खिलाफ सारे नफरती अभियान धराशायी हो गए। हम कह सकते हैं नफ़रत हारी, उलफ़त जीती।

जरा सोचिए कि जो लोग द कश्मीर फाइल्स और द केरल स्टोरी जैसी विवादित फिल्में देखने के लिए उमड़े, उन्हीं लोगों ने आदिपुरुष को क्यों खारिज कर दिया? इस तथ्य को किस तरह से रेखांकित किया जाना चाहिए? इसमें कोई दो राय नहीं कि दोनों तरह की फिल्मों के दर्शकों की रुचि में ज्यादा अंतर नहीं रहा होगा?

सिनेमा कभी नहीं सिखाता आपस में बैर करना। सिनेमा सिर्फ और सिर्फ मोहब्बत का पैगाम देता है। ऐसे दौर में सिनेमा युग के लौटने की सबको बधाई।

दोस्तो, पिक्चर प्लस के नये अंक को हमने सिनेमा के सबसे बड़े प्रेम पुजारी, सबसे बड़े गाइड फिलॉस्फर, रंगीला, सदाबहार देवानंद पर केंद्रित रखा है। देवानंद की जन्मशती शुरू हो गई है। उनका जन्म 26 सितंबर, 1923 को हुआ था। महान गीतकार शैलेन्द्र की तरह यह महीना उनकी भी सौवीं जन्मतिथि का है। संयोग देखिए कि दोनों की पुण्यतिथि भी दिसंबर माह में पड़ती है। हम दिसंबर अंक को शैलेन्द्र पर केंद्रित निकालना चाहते हैं। अपने लेखादि हमें भेजिएगा।

यह अंक कैसा लगा - जरूर मार्गदर्शन कीजिएगा।

अब हम जुटते हैं अगले अंक की तैयारी में। आपका। सादर।

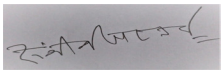

-संजीव श्रीवास्तव